

डॉ. लेस्ली एलन, विलाप, सत्र 15, विलाप और ईसाई धर्म

© 2024 लेस्ली एलन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. लेस्ली एलन विलाप की पुस्तक पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 15 है, विलाप और ईसाई धर्म।

हमने विलाप का सीधा पाठ पीछे छोड़ दिया है, लेकिन अब मैं आपके साथ जो करना चाहता हूँ वह है ईसाई दृष्टिकोण से विलाप का अध्ययन करना।

मेरे पास 15 बिंदु हैं जो मैं आपके सामने रखना चाहता हूँ।

पहला यह है कि वास्तव में, विलाप के लिए एक नया नियम प्रतिरूप है। हम इसे लूका के सुसमाचार में अध्याय 19 और श्लोक 41 से 44 में पाते हैं। यहाँ यीशु यरूशलेम में आ रहे हैं, यरूशलेम के निकट आ रहे हैं, और वह यरूशलेम के लिए रोते हैं, उन दुखों के लिए नहीं जो उसने सहे हैं, बल्कि उन दुखों के लिए जो उसे सहने हैं।

इसलिए, जबकि विलापगीत पीछे देखता है, यीशु आगे देखता है। उसके चेहरे पर वही दुख की अभिव्यक्ति है जो हम विलापगीत में पाते हैं और साथ ही अपराध बोध का भी संकेत है। जब यीशु पास आया और उसने शहर को देखा, तो वह उस पर रोया और कहा, यदि तुम, तुम भी, इस दिन उन चीजों को पहचान लेते जो शांति लाती हैं, लेकिन अब वे तुम्हारी आँखों से छिपी हुई हैं।

वास्तव में, वे दिन आएंगे जब तुम्हारे दुश्मन तुम्हारे चारों ओर प्राचीर खड़ी कर देंगे और तुम्हें चारों ओर से घेर लेंगे। वे तुम्हें और तुम्हारे बच्चों को जमीन पर रौंद देंगे, और वे तुम्हारे भीतर एक पत्थर भी नहीं छोड़ेंगे क्योंकि तुमने परमेश्वर से अपने दर्शन के समय को नहीं पहचाना। और इसलिए यह ईस्वी सन् 70 और यरूशलेम के नए सिरे से पतन और दूसरे मंदिर, हेरोदेस के मंदिर के विनाश की ओर आगे देख रहा है।

और इसलिए, विलाप के साथ एक तरह की समानता है और हम यीशु के होठों पर अपराध और दुःख की एक समान अभिव्यक्ति पाते हैं। मैं आगे कहना चाहता हूँ कि विलाप को संक्षेप में प्रस्तुत करने के दो अच्छे तरीके हैं। और यहाँ एक तरीका है।

मैं बाइबल की ज़ोंडरवन हैंडबुक से उद्धरण देता हूँ। विलाप पाँच विलापों का संग्रह है जो 587 ईसा पूर्व में बेबीलोन की सेना द्वारा यरूशलेम के विनाश के लिए शोक व्यक्त करते हैं। मेरा उससे केवल यही मतभेद है कि मुझे लगता है कि यह 586 था, लेकिन यह एक छोटी सी बात है।

लेकिन यह ठीक है। यह ऐतिहासिक व्याख्या का सवाल है, और हमें पाठ के ऐतिहासिक संदर्भ को देखना होगा, और यह यहाँ बहुत अच्छी तरह से किया गया है। लेकिन हम वहाँ नहीं रुक सकते।

अब मैं ब्रेवार्ड चाइल्ड्स की पुस्तक इंट्रोडक्शन टू द ओल्ड टेस्टामेंट की ओर मुड़ता हूँ। गौरतलब है कि इस पुस्तक का पूरा शीर्षक है इंट्रोडक्शन टू द ओल्ड टेस्टामेंट ऐज स्क्रिप्चर। यहाँ, उन्होंने एक व्याख्यात्मक दृष्टिकोण पाया है।

उन्हें इस पुस्तक में इतिहास के बजाय कुछ स्थायी मूल्य मिलता है। और यही चाइल्ड्स ने लिखा है। विलाप की पुस्तक विश्वासियों की हर पीढ़ी की सेवा करती है, पीड़ित विश्वासियों की, जिनके लिए इतिहास असहनीय हो गया है।

और यह है। और यह बहुत अच्छा है। उन्होंने इसे बहुत अच्छी तरह से संक्षेप में प्रस्तुत किया है।

उनके मन में हर पीढ़ी के विश्वासी हैं जो भयंकर संकट के दौर से गुज़रते हैं। तो यह दूसरा बिंदु है।

तीसरा बिंदु, विलाप, का एक प्रामाणिक महत्व है क्योंकि यह विभिन्न विवरणों में पवित्रशास्त्र के अन्य भागों के साथ भी संरेखित है।

उदाहरण के लिए, ईश्वर दुख के प्रति संवेदनशील है। यह एक ऐसा बिंदु था जो मार्गदर्शक और अध्याय 5 में प्रार्थना करने के लिए आने वाली मण्डलियों द्वारा बहुत स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है। लेकिन ईश्वर दुख के प्रति संवेदनशील है। मैं आपको निर्गमन की पुस्तक, अध्याय 2, श्लोक 23 से 25 का संदर्भ देता हूँ।

लंबे समय के बाद, मिस्र के राजा की मृत्यु हो गई। इस्राएली अपनी गुलामी के बोझ तले कराह उठे और चिल्लाने लगे। गुलामी से बाहर निकलकर, उनकी मदद की पुकार परमेश्वर तक पहुँची।

परमेश्वर ने उनकी कराह सुनी, और परमेश्वर ने अब्राहम, इसहाक और याकूब के साथ अपनी वाचा को याद किया। परमेश्वर ने इस्राएलियों पर दृष्टि डाली, और परमेश्वर ने उन पर ध्यान दिया। और मुझे उस प्रार्थना की बहुत याद आती है जो हमें विलापगीत में एक से अधिक बार मिलती है।

हे प्रभु, देख और देख। देख और देख परमेश्वर यहाँ क्या करता है। निर्गमन 3, आयत 7 से 9 में आगे बढ़ते हुए, हम एक समान कथन पाते हैं।

यहोवा ने कहा कि मैंने मिस्र में रहने वाले अपने लोगों के दुख को देखा है। मैंने उनके अत्याचारी मालिकों के कारण उनकी पुकार सुनी है। वास्तव में, मैं उनके दुखों को जानता हूँ।

मैं उन्हें मिस्रियों से छुड़ाने और उस देश से निकालकर एक अच्छे और विस्तृत देश में ले जाने के लिए आया हूँ, एक ऐसा देश जहाँ दूध और शहद की धाराएँ बहती हैं, कनानियों के देश तक और भी बहुत कुछ। इस्राएलियों की पुकार अब मेरे पास पहुँची है। मैंने यह भी देखा है कि मिस्रियों ने उन पर कैसे अत्याचार किए।

और यह एक अंतर्निहित विचार था जो गुरु के मन में था और जिसे मण्डली ने पकड़ लिया, कि परमेश्वर संवेदनशील होगा और वास्तव में उनकी मदद के लिए आएगा। विहित महत्व का दूसरा क्षेत्र यह है कि परमेश्वर के लोगों के लिए उस तरह की भाषा में सीखने के लिए एक सबक था जिसे हम विलाप में पढ़ते हैं। और यहाँ मैं निर्गमन अध्याय 12 और श्लोक 15 के बारे में सोच रहा हूँ, जो आनन्दित होने वालों के साथ आनन्दित होने और रोने वालों के साथ रोने का उपदेश देता है।

और यह कुछ ऐसा था जो गुरु, सबसे बढ़कर, कर सकता था। वह उन लोगों के साथ रोता था जो रोते थे। और हमें ऐसा करने की ज़रूरत क्यों है? खैर, सभोपदेशक में, एक बुनियादी कथन है जिसे हमें गंभीरता से लेने की ज़रूरत है।

और यह सभोपदेशक अध्याय 2 और श्लोक 6 में है। और मुझे जल्दी से इस पर आना चाहिए। यह उनके बारे में बात कर रहा है; यह वास्तव में अध्याय 3 और श्लोक 6 है। चलो इसे ठीक से समझते हैं, और यह अध्याय 3 और श्लोक 4 है। और यह अलग-अलग समय के बारे में बात कर रहा है।

और कभी-कभी, हमारे पास अच्छा समय होता है और कभी-कभी बुरा समय भी होता है। और यह अंतर है। और अध्याय 3 की आयत 4 कहती है, रोने का समय है और हंसने का समय है, शोक मनाने का समय है और नाचने का समय है।

हमें उन समयों को पहचानने की ज़रूरत है, अपने लिए और अपने आस-पास के लोगों के लिए भी। अगर यह रोने का समय है, तो हमें अपने लिए और रोने वाले दूसरे लोगों के लिए भी रोना चाहिए। अगर यह शोक मनाने का समय है, तो हमें शोक मनाने और उसके लिए समय देने की ज़रूरत है।

और कुल मिलाकर, फिर, मानवीय दुःख की बहुत आवश्यकता है। विलाप इस बात की पुष्टि करते हैं कि दुःख आवश्यक है; व्यक्ति को शोक करना चाहिए। हम पाते हैं कि अंतिम संस्कार विलाप में, जो उस पुस्तक में बहुत अधिक हावी है, मानवीय दुःख की आवश्यकता पर जोर दिया गया है।

और इसलिए, कुल मिलाकर हम शोक के आध्यात्मिक मूल्य के बारे में बात कर सकते हैं, जो दुःख की एक लंबी व्याख्या है। हमें इस पुस्तक की आवश्यकता है। यह पुस्तक हमारे लिए एक पुस्तक है। यह शास्त्र का एक बहुत बड़ा हिस्सा है।

फिर, एक चौथा बिंदु है: दुःख को शब्दों में व्यक्त करने की आवश्यकता। मुझे एक पुस्तक मिली, मुझे लगता है कि यह एक विदेशी भाषा में थी, लेकिन इसका अंग्रेजी में अनुवाद किया गया था, इसका नाम है सफ़रिंग।

और यह डोरोथी सुरला नामक एक महिला द्वारा लिखी गई थी। और उसने दुःख और भाषा के बारे में बात की थी। वास्तव में, उस पुस्तक के तीसरे अध्याय का नाम दुःख और भाषा था।

उन्होंने कहा कि दुख पर काबू पाने की दिशा में पहला कदम एक ऐसी भाषा खोजना है जो उस अकल्पनीय पीड़ा से बाहर निकलती है जो हमें गूंगा बना देती है। हमें विलाप की भाषा, रोने की भाषा, दर्द की भाषा की आवश्यकता है। यह दुख को शब्दों में व्यक्त करने और इसे शब्दों में व्यक्त करके अपने सिस्टम से बाहर निकालने की आवश्यकता पर जोर देता है।

एक किताब है जो मुझे बहुत मूल्यवान लगी, शायद कई अन्य किताबों से भी ज़्यादा, यह दुःख पर एक तकनीकी किताब है। इसका नाम है द पाथ थ्रू ग्रीफ़, और यह मार्गुराइट मोवार्ड नामक एक महिला द्वारा लिखी गई है। और मैं इस विशेष वीडियो में उस किताब से अलग-अलग चीज़ों को देखने जा रही हूँ जिन्हें मैं उद्धृत करना चाहती हूँ।

और उदाहरण के लिए, वह कहती है, मुझे संदर्भ की ओर मुड़ना चाहिए। वह वही है जो उद्धरण देती है। क्या आपको याद है कि मैंने रूथ फेल्डमैन की एक कविता उद्धृत की थी? यह कविता थी, और यहीं से मुझे यह मिली। जब नुकसान का पानी बढ़ा, तो मैंने शब्दों का एक जहाज बनाया, भाषण के हर हिस्से से दो शब्द लिए, और बाढ़ पर सवार हो गई।

और हम यहाँ हैं। कविता आगे बढ़ती है, लेकिन मुझे लगा कि यह पहला छंद ही इतना सही है। मार्गुराइट माउवर्ड आगे कहती हैं कि, उस अध्याय में आगे, बात करना हमारी भावनाओं को व्यक्त करने का सबसे स्पष्ट तरीका है।

हम उन्हें उनकी संपूर्णता और विस्तार से वर्णित कर सकते हैं। हम उदाहरण दे सकते हैं और अर्थ, रंग, तीव्रता और बारीकियों के बारे में बता सकते हैं। हम उन सूक्ष्म भावनाओं के लिए रूपकों का भी उपयोग कर सकते हैं जिन्हें आसानी से परिभाषित नहीं किया जा सकता।

वह बातचीत की आवश्यकता के बारे में बात करती है। निश्चित रूप से, जब मण्डली ऐसा नहीं कर सकती थी, तो पहले गुरु की ओर से बहुत सारी बातें होती थीं, लेकिन उनके विचारों का मार्गदर्शन करना, उन्हें यह समझाना कि क्या हो रहा है, और फिर अंत में, वे खुद के लिए बोल सकते थे। और यही महान चरमोत्कर्ष है।

पाँचवाँ बिंदु यह है कि विलाप में हमारे पास व्याख्या और मूल्यांकन की खोज है। क्या हमारे साथ जो हुआ है उसका कोई अर्थ है? और इस विशेष मामले में, गुरु द्वारा उत्तर में बहुत हद तक हाँ लाई गई है।

और यहाँ अर्थ की खोज है। हमने कहा कि हमें इस विशेष मुद्दे पर बहुत सावधान रहना होगा। दुःख बहुत अलग है, और किसी को यह नहीं मानना चाहिए कि हम किसी व्यक्ति के दुःख की प्रकृति को जानते हैं।

हमें बहुत ध्यान से सुनना होगा। लेकिन 586 में पीछे छूट गए इन लोगों के लिए, जिस चीज़ की उन्हें ज़रूरत थी, वह अल्कोहलिक्स एनॉनिमस के संदेश के बहुत करीब थी, जैसा कि हम बता रहे हैं। जो कुछ हुआ था उसकी ज़िम्मेदारी लेना और यह महसूस करना कि वे ज़िम्मेदार थे, यह महसूस करना कि इस विशेष मामले में वे ही दोषी थे।

जैसा कि मैंने कहा, दुःख कई रूप और आकार लेता है, और दुःख के अधिकांश उदाहरण इस श्रेणी में नहीं आते हैं, लेकिन अगर ऐसा होता है, तो इसे इंगित किया जाना चाहिए।

छठा बिंदु मानवीय दुःख का पवित्रीकरण है। मेरा इससे क्या मतलब है? खैर, पुस्तक का नाम, हम इसे विलाप कहते हैं, और इसके पीछे एक कारण है।

हिब्रू परंपरा में, यहूदी परंपरा में, पुस्तक के दो नाम हैं। और पहला नाम उस पैटर्न का अनुसरण करता है जो हम अक्सर हिब्रू बाइबिल की पुस्तकों में पाते हैं। आप पहला शब्द लें, और वही नाम है।

और इसलिए ईचा, वह चीख, वह चीख, आप विलाप का संदर्भ ले सकते हैं। यह ईचा में कहा गया है, और आप वहाँ हैं। लेकिन उनके पास इसके लिए एक और नाम था, और वह था किनोट।

और किना, मुझे लगता है कि मैंने पहले भी उल्लेख किया है, यह अंतिम संस्कार के लिए विलाप का शब्द है। और किनोथ बहुवचन है, अंतिम संस्कार विलाप। और यह बहुत ही आश्चर्यजनक है कि यह पुस्तक का नाम है।

इसे प्रार्थनाएँ या विलाप प्रार्थनाएँ कहा जा सकता था और कोई हिब्रू शब्द होता जो उस वर्णन के लिए उपयुक्त होता। लेकिन पुस्तक के नामकरण में मानवीय दुःख का पवित्रीकरण है। अंतिम संस्कार विलाप।

शोक आवश्यक है। वे शोक प्रक्रियाएँ आवश्यक हैं, और वे पुस्तक में पाए जाने वाले दो शैलियों में से एक पर टिकी हुई हैं। प्रार्थना विलाप नहीं, शायद अधिक सम्मानजनक तरीका, आध्यात्मिक तरीका, धार्मिक तरीका, लेकिन धीरे-धीरे लेकिन निश्चित रूप से दुःख के माध्यम से काम करने की वह मानवीय प्रक्रिया, किना, यह अंतिम संस्कार विलाप, अपने कपड़े फाड़ने और फूट-फूट कर रोने जैसी सभी शारीरिक अभिव्यक्तियों के साथ। और इसलिए, यह वास्तविक शीर्षक में जो कुछ भी हो रहा है उसका उत्सव है।

और फिर अगला बिंदु, सातवाँ बिंदु, यह हमें शोक मनाने में सहायता प्रदान करता है, एक धर्मशास्त्रीय मॉडल प्रदान करके। शोक मनाना सही है क्योंकि यहाँ उन लोगों का विवरण है जिन्होंने विलाप के माध्यम से पूरे समय शोक मनाया।

यह मुझे पुराने नियम में पाए जाने वाले कुछ अन्य उदाहरणों की याद दिलाता है, और उनमें से एक 1 शमूएल में वर्णित कथा है। क्या आपको हन्ना याद है? उसका कोई बच्चा नहीं था। एक दूसरी पत्नी थी जिसका बच्चा था, और शायद उसने कहा, मेरे बच्चे को थोड़ी देर के लिए पकड़ो, लेकिन ज्यादा देर तक नहीं।

मुझे अपने बच्चे को दूध पिलाना है क्योंकि वह मेरा बच्चा है, है न? वह तुम्हारा बच्चा नहीं है। और वह बहुत बुरी थी। वह दूसरी पत्नी बहुत बुरी थी।

और हन्ना बहुत दुखी थी, और बेचारा पति बीच में फँस गया, उसे सांत्वना देने की कोशिश कर रहा था; ठीक है, मैं तुमसे प्यार करता हूँ, मैं तुमसे प्यार करता हूँ, लेकिन किसी तरह यह पर्याप्त नहीं था। और इसलिए त्योहार के समय, वह शीलो के मंदिर में जाती है, और ऐसा कहा जाता है, 1 शमूएल 1:10, वह बहुत व्यथित थी और उसने प्रभु से प्रार्थना की और फूट-फूट कर रोई। और उसने यह मन्त्रत माँगी, हे सेनाओं के यहोवा, यदि तू अपनी दासी के दुख को देखे और मुझे याद रखे और अपनी दासी को क्षमा न करे, बल्कि अपनी दासी को एक लड़का दे।

फिर मैं उसे तुम्हारे सामने नाज़ीर के रूप में रखूँगा, जब तक कि वह मर न जाए। मैं उसे तुम्हारी सेवा में सौंप दूँगा। और यहाँ हम हैं, यह एक और धार्मिक मॉडल और वादा है जो हन्ना ने किया है, लेकिन वह ऐसा चाहती है, वह भगवान को मनाने की कोशिश कर रही है, मुझे एक बच्चा चाहिए।

मैं उसे नहीं रखूँगा, मैं उसे तीन साल तक पालूँगा लेकिन फिर मैं उसे तुम्हारी देखभाल में सौंप दूँगा, उसे पवित्र स्थान पर सौंप दूँगा। और फिर दूसरा मॉडल खुद एक कथा नहीं है, लेकिन यह प्रार्थना में पाया जाता है; यह 2 राजाओं में सुलैमान की प्रार्थना में पाया जाता है। 2 राजा अध्याय 8 और श्लोक 37 से, नहीं यह 1 राजा है, 1 राजा अध्याय 8 श्लोक 37 से 39।

यह मंदिर के उपयोग के बारे में बात कर रहा है, और इसका मुख्य उपयोग यह है कि यह एक ऐसा स्थान है जहाँ प्रार्थना विलाप सुना जा सकता है। और इसलिए सभी प्रकार के संकट हो सकते हैं, लेकिन संकट जो भी हो, आप इस आश्वासन के साथ मंदिर में आ सकते हैं कि भगवान सुनेंगे और भगवान उन प्रार्थनाओं का उत्तर देंगे। और इसलिए, यदि देश में कोई अकाल पड़ता है, यदि प्लेग, तुषार, फफूँदी, टिड्डे या कैटरपिलर हैं, तो बहुत कुछ गलत हो सकता है और फसल को रोक सकता है।

अगर उनके दुश्मन उनके किसी शहर में उन्हें घेर लेते हैं, तो यह हमें विलाप के करीब ले आता है। चाहे कोई भी विपत्ति हो, कोई भी बीमारी हो, कोई भी प्रार्थना हो, कोई भी दलील हो, किसी भी व्यक्ति या आपके सभी लोगों की ओर से, व्यक्तिगत या सामुदायिक। सभी अपने दिलों की पीड़ा जानते थे, इसलिए उन्होंने अपने हाथ इस घर की ओर बढ़ाए।

और उनके अपने दिल की पीड़ा, यानी, इस वस्तुगत संकट के प्रति यह व्यक्तिपरक प्रतिक्रिया, चाहे वह कुछ भी हो। इस घर की ओर अपने हाथ बढ़ाना, यही उन्हें करने की ज़रूरत है। और फिर यहाँ प्रार्थना है, यहाँ स्वर्ग में अपने निवास स्थान पर, क्षमा करें, कार्य करें, और उन सभी को प्रतिफल दें जिनके दिलों को आप जानते हैं।

और इसलिए यह है, मंदिर के विशेष उपयोग में एक और मॉडल है। और मेरा मानना है कि यह प्रार्थना बर्बाद मंदिर के भौतिक संदर्भ में लाई गई है।

और फिर आठवां बिंदु, हमने देखा है कि विलाप में यह एक लंबी प्रक्रिया है और ऐसा लगता है कि यह आगे भी जारी रहेगी।

और कभी-कभी यह चक्राकार रूप से घूमता रहता था। दुख वापस आता रहता था, साथ ही शिकायत और अपराधबोध भी। लेकिन नुकसान की यह भावना वापस आती रहती थी और सभी कविताओं में बारी-बारी से हावी होती रहती थी।

सीएस लुईस, मैंने उनका ज़्यादा ज़िक्र नहीं किया है, लेकिन उनकी छोटी सी किताब, ए ग्रिफ़ ऑब्ज़र्व्ड, दुःख के अध्ययन में एक बेहतरीन किताब है। क्योंकि उन्होंने अपनी पत्नी, प्यारी पत्नी जॉय की कैंसर से मृत्यु के बाद अपनी प्रतिक्रियाएँ लिखी थीं। और उन्होंने एक बात कही थी, दुःख एक बम की तरह है जो चक्कर लगाता रहता है और हर बार जब वह ऊपर आता है तो अपने बम गिराता है।

इसलिए, यह लंबे समय तक बार-बार वापस आता रहता है। और यही दुख है। और आप इन बार-बार संदर्भों में महसूस करते हैं कि यह बार-बार वापस आता है, और यह इस बात का प्रतिबिंब है कि मण्डली किस तरह सोच रही थी और उसे क्या सोचना चाहिए था।

यह दुःख की प्रक्रिया का एक स्वाभाविक हिस्सा है। और यहाँ मैं फिर से उस पुस्तक का उल्लेख करता हूँ, द पाथ थ्रू ग्रिफ़। मुझे लगता है कि इस बिंदु पर इसमें एक अच्छी टिप्पणी है।

दुःख अप्रत्याशित है। एक व्यक्ति के पास अच्छे दिनों की एक श्रृंखला होती है और फिर वह फिर से दुःख की भावना में डूब जाता है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि वह पीछे खिसक रहा है या प्रगति की कमी है।

बार-बार उतार-चढ़ाव आना शोक का एक सामान्य हिस्सा है। और इसमें अनिश्चितता भी है। यह कुछ समय के लिए हावी हो जाती है, चली जाती है और फिर वापस आ जाती है। विलाप में यही हो रहा है।

नौवां बिंदु यह है कि विरोध के लिए जगह है। चुनौती के लिए जगह है, यहाँ तक कि भगवान को चुनौती देने के लिए भी। और हमने पिछले वीडियो में यह देखा, कि क्यों, क्यों? सिर्फ़ एक क्यों नहीं, दो क्यों।

क्यों, क्यों? और यह हैरानी और विरोध का कारण है। और लुईस ने अपनी पुस्तक, ए ग्रिफ़ ऑब्ज़र्व्ड में इसका उल्लेख किया है। और उनकी एक टिप्पणी संदेहात्मक लगती है, लेकिन ऐसा उन्होंने महसूस किया था।

भगवान बहुत अनुपस्थित हैं, मुसीबत में मदद करते हैं। और यह विलापगीत के समापन के तरीके के बहुत अनुरूप है।

और फिर दसवां बिन्दु, इसमें शिकायत की गुंजाइश है।

दूसरे लोगों के खिलाफ शिकायत करना न्याय की मांग है। और हमने विलापगीत में ही शिकायत के लिए इस आह्वान को याचिका के रूप में देखा। अध्याय 1 और श्लोक 9 में, हम पाते हैं कि सिय्योन बीच में आता है।

हे प्रभु, मेरे कष्ट को देख, क्योंकि शत्रु ने विजय प्राप्त कर ली है। शत्रु ने बड़ा काम किया है। शत्रु ने अहंकार से काम लिया है।

इस दुश्मन के खिलाफ विरोध प्रदर्शन हो रहा है और उन्हें दंडित करने की मांग हो रही है। वे गलत हैं और उन्हें दंडित किया जाना चाहिए।

मैं गलत हो सकता हूँ, मैं गलत हूँ, लेकिन वे भी गलत हैं। इसलिए निष्पक्ष रहें, उन्हें सज़ा दें। और अध्याय 1 के अंत में, उन्हें वैसा ही रहने दें जैसा मैं हूँ।

उनके सारे बुरे कामों को अपने सामने आने दो। उनके साथ वैसा ही व्यवहार करो जैसा तुमने मेरे साथ किया है क्योंकि मेरे सारे अपराध हैं। उनके पक्ष में भी गलतियां हैं।

और न्याय के लिए, कुछ किया जाना चाहिए। और यह उस शिकायत प्रार्थना में आगे बढ़ता है जिसे गुरु 3:59 में दोहराता है। हे प्रभु, आपने मेरे साथ हुए अन्याय को देखा है। मेरे मामले का न्याय करें, मेरा पक्ष लें।

और 64 से 66, हे प्रभु, उनके कामों के अनुसार उन्हें उनके कर्मों का बदला दो। क्रोध में उनका पीछा करो और उन्हें प्रभु के स्वर्ग के नीचे से नष्ट कर दो। हम गैर-ईसाई कह सकते हैं, लेकिन हमें याद रखना चाहिए कि मैंने आपको 2 थेस्सलुनीकियों के अध्याय 1 की आयत 5 से 10 में संदर्भित किया था।

पौलुस ने भी यही करुणामयी कथन किया है—सताए गए थेस्सलुनीकियों के मसीहियों के लिए करुणामयी—कि परमेश्वर उन लोगों को दण्डित करेगा जो उसे सता रहे हैं। उदाहरण के लिए, हम इसे प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में पाते हैं।

प्रकाशितवाक्य अध्याय 6, श्लोक 9 और 10. जब उसने पाँचवीं मुहर खोली, तो मैंने वेदी के नीचे उन लोगों की आत्माएँ देखीं, जिन्हें परमेश्वर के वचन और उनके द्वारा दी गई गवाही के लिए बलि चढ़ाया गया था। वे ऊँची आवाज़ में चिल्लाए, हे प्रभु, पवित्र और सच्चे, यह कब तक रहेगा? वहाँ विरोध करो, चुनौती दो।

आपको न्याय करने और पृथ्वी के निवासियों से हमारे खून का बदला लेने में कितना समय लगेगा? हम इसे लूका 18 में यीशु द्वारा बताए गए एक दृष्टान्त में भी पाते हैं। उन्होंने एक विधवा के बारे में एक दृष्टान्त बताया जो इस न्यायाधीश के पास आती रहती है और कहती है, मुझे मेरे विरोधी के खिलाफ न्याय दिलाओ। और वह उसे सताती रहती है और सताती रहती है, और अंततः यह न्यायाधीश कहता है, मैं उसका न्याय करूँगा।

ताकि वह बार-बार आकर मुझे परेशान न करे। और दृष्टान्त का अर्थ यह है कि अन्यायी न्यायी क्या कहता है। क्या परमेश्वर अपने चुने हुएों का न्याय न चुकाएगा, जो दिन-रात उसकी दुहाई देते हैं? क्या वह उनकी सहायता करने में देर नहीं करेगा? मैं तुमसे कहता हूँ, वह शीघ्र ही उनका न्याय चुकाएगा।

वास्तव में, अपने विरोधियों के खिलाफ न्याय। और यही है। मुझे रहस्यपूर्ण किताबें पढ़ना पसंद है।

इस समय मैं एक श्रृंखला पढ़ रहा हूँ, लगभग 15 या उससे अधिक, जिसे ब्रिटिश लेखिका पी.डी. जेम्स ने लिखा है। और वह वास्तव में एक एंग्लिकन थी। और हम पाते हैं कि यहाँ-वहाँ धार्मिक विषय सामने आते हैं।

और उन्होंने ओरिजिनल सिन नाम की एक किताब लिखी। और उस शीर्षक के पीछे, लंदन में टेम्स नदी के किनारे एक प्रकाशन फर्म का तथ्य है। और इस प्रिंटिंग फर्म के मालिक और संचालकों के बीच पिछली पीढ़ियों में कुछ गलतियाँ हुई थीं।

और यह अलग-अलग तरीकों से सामने आया। और यह सामान्य कथानक था। लेकिन मैं इसमें एक विशेष दृश्य का उल्लेख करना चाहता हूँ।

वहाँ एक दफ्तर था। और आपको एक आदमी मिला, एक अधेड़ उम्र का आदमी, जो असल में यहूदी है। और फिर वहाँ एक युवा लड़की, एक युवा महिला टाइपिस्ट थी।

और उसके पास कोई आध्यात्मिक भावना या आकांक्षा नहीं है। लेकिन एक दिन, वह भगवान के बारे में बात करती है। और वह इस क्लर्क, इस ऑफिस मैनेजर, इस यहूदी आदमी से कहती है, अगर मेरा कोई भगवान होता, तो मैं चाहती कि वह बुद्धिमान, खुशमिजाज और मनोरंजक हो।

और उसके यहूदी सहकर्मी ने कहा कि मुझे संदेह है कि जब वे तुम्हें गैस चेंबर में ले गए थे तो तुम्हें उससे बहुत राहत मिली होगी। शायद तुम्हें प्रतिशोध का देवता पसंद हो। और यह सच है।

यह सब कुछ बताता है। यह इस बात पर निर्भर करता है कि हम कहाँ हैं। और जब हमें सताया जाता है, तो हम उसी तरह चिल्लाते हैं जैसा कि नए नियम और पुराने नियम में इन शास्त्रों में बताया गया है।

इसलिए शास्त्रों में कहा गया है कि शिकायत की गुंजाइश है। और उन मानवीय शत्रुओं के खिलाफ न्याय की मांग की जानी चाहिए जो हमारे साथ गलत कर रहे हैं।

फिर, ग्यारहवाँ बिंदु, एक निर्णायक बिंदु, एक निर्णायक बिंदु।

जैसा कि मैंने पहले कहा है, यह समापन नहीं है। अंततः, कोई समापन तक पहुंचने की उम्मीद करता है, लेकिन एक मोड़ आता है जब दर्द पहले की तरह ही बुरा होता है।

लेकिन हाँ, आप भोर की शुरुआत देख सकते हैं, उस अंधकार की शुरुआत जो धीरे-धीरे पूर्व दिशा में दूर हो रहा है। बस इसका एक छोटा सा संकेत है। और यही वह बिंदु है जहाँ विलापगीत 5 पहुँचता है।

यह एक महत्वपूर्ण मोड़ है और एक सकारात्मक भविष्य के लिए आशा की झलकियाँ हैं। और यही वह अनुभव था जो गुरु ने उस पहले विलाप के बारे में अपने विचारों के बारे में बात करते हुए अनुभव किया कि भगवान ने उत्तर दिया। और भगवान पास आए और कहा, डरो मत।

और यह उसके लिए एक महत्वपूर्ण मोड़ था। और उस मोड़ के साथ-साथ, उसने उस पीड़ा के बारे में सोचा। मैं अभी अंत तक नहीं पहुंचा हूँ।

मैं अंत तक नहीं पहुंचा हूँ। वास्तव में, मैं एक उत्तरजीवी हूँ। और यह उसे निर्गमन 34 और श्लोक 6 और वहाँ मिले खजाने की खोज करने के लिए प्रेरित करता है।

लेकिन सकारात्मक भविष्य के लिए आशा की ये झलकियाँ, लेकिन उन्हें स्वयं साकार किया जाना चाहिए। और इसके विपरीत, हमारे पास अच्छे इरादे वाले दोस्त हो सकते हैं जो हमारे साथ आते हैं और हमें आश्चस्त करते हैं कि अंत में यह बेहतर होने वाला है। हम इससे उबरने जा रहे हैं।

और हम उस समय इसकी सराहना नहीं करते हैं। और उस किताब, द पाथ ऑफ़ ग्रिफ़ में इसका उल्लेख है। वास्तव में, मैंने ऐसे लोगों से निपटने के कुछ तरीके सीखे हैं जो ऐसी बातें कहते हैं, यह सब अच्छे के लिए है।

अभी आपको यह नहीं पता, लेकिन किसी दिन आपको यह पता चल जाएगा। मुझे लगता है कि मैं अभी कहूँगा। मुझे ऐसा नहीं लगता।

और इसलिए, यह मददगार नहीं है। और ऐसे लोग हैं जो रोमियों 8:28 को उद्धृत करना पसंद करते हैं। यह ठीक होने जा रहा है। रोमियों 8:28। जो लोग परमेश्वर से प्रेम करते हैं, उनके लिए सभी चीजें मिलकर भलाई के लिए काम करती हैं, जिन्हें उसके उद्देश्य के अनुसार बुलाया गया है।

यह सब ठीक है। बस इस पर विश्वास करो। और यह इतना आसान नहीं है।

और आपको यह याद रखना होगा कि रोमियों 8:28 किस संदर्भ में बोला गया है। और यह उन लोगों द्वारा और उनके लिए बोला गया है जो, पद 35 में, कठिनाई, संकट, उत्पीड़न, अकाल, नग्नता, खतरे या तलवार से गुज़र रहे हैं। ये सभी संभावनाएँ बहुत वास्तविक थीं या वास्तव में अनुभव की गई थीं।

उस संदर्भ में, हम रोमियों 8:28 का उपयोग कर सकते हैं। और इसलिए, हम इसका उपयोग कर सकते हैं यदि हम उस पीड़ा से गुज़रे हैं और कहते हैं, हाँ, यह सच है। हम इसका उपयोग उस साथी विश्वासी के लिए कर सकते हैं जो पीड़ित है यदि हम इसे गवाही के रूप में उपयोग करते हैं। मैं जानता हूँ कि यह सच है, लेकिन इसे सिर्फ़ अपने आप में फेंक देना, मददगार नहीं है।

लेकिन सकारात्मक भविष्य के लिए आशा की आत्म-साक्षात्कारित झलक, यह पहुँचने के लिए एक अद्भुत स्थान है। और यह एक महत्वपूर्ण मोड़ है।

बारहवाँ बिंदु जो मैं उठाना चाहता हूँ वह है घायल मरहम लगाने वाले का प्रश्न, जिस पर मैं पहले भी चर्चा कर चुका हूँ।

मैं अभी इस पर विस्तार से चर्चा नहीं करूँगा। हमने देखा कि यह उस प्राचीन मिथक से जुड़ा है जिसे कार्ल जंग ने उठाया था और फिर हेनरी नोवेन ने दोहराया, जिन्होंने अपनी पुस्तक द वाउंडेड हीलर में इसे पादरियों पर लागू किया। गुरु वास्तव में एक घायल हीलर होता है।

और उसके घाव उसे, कोई कह सकता है, अपने आस-पास के लोगों के खुले घावों का इलाज करने के योग्य बनाता है। लेकिन साथ ही, एक और भावना है जो सच है, और जिसे हमने गुरु को झुकते हुए देखा, कि किसी पीड़ित व्यक्ति की मदद करने की कोशिश करना बहुत ज़्यादा हो सकता है। और कोई इसे अपने ऊपर बहुत ज़्यादा ले लेता है, और यह बहुत भारी होता है।

और इसके बाद समय की जरूरत होती है। हमने अध्याय 2 और अध्याय 3 में दो जगह देखा जहाँ गुरु ने इसी तरह से प्रतिक्रिया दी। वह इसे बर्दाश्त नहीं कर सकता।

यह बहुत ही अभिभूत करने वाला है। यह सच भी है। यह घायल मरहम लगाने वाले की अवधारणा के साथ मेल खाता है।

13वाँ बिंदु, शोक मनाने के लिए पर्याप्त समय की आवश्यकता होती है। हम दूसरे लोगों के शोक मनाने पर अधीर हो सकते हैं। और हम कहते हैं, इसे भूल जाओ।

इसे भूल जाओ। यही हम कहना चाहते हैं। यह एक विलासिता है जिसका आनंद तुम यहाँ रहकर उठा रहे हो।

और एक तरह से, गुरु को इस स्थिति का सामना करना पड़ा। और मुझे लगता है कि यही अध्याय 4 का रहस्य है, कि उसे एहसास हुआ कि उसे धैर्य दिखाने की ज़रूरत है। आप अध्याय 3 से अध्याय 5 तक नहीं जा सकते। आपको थोड़ा और शोक मनाना होगा।

मण्डली, आपको और अधिक शोक मनाना होगा। और इसलिए, शोक की अपनी समय सारिणी होती है। इसके लिए पर्याप्त समय की आवश्यकता होती है।

चौदहवाँ, हमें यह समझना होगा कि शोक करने से आस्था या जीवन को खतरा हो सकता है। और चार्ल्स डार्विन का मामला है। और मैं दूसरे दिन एक लेख पढ़ रहा था जिसमें इसी बात पर बात की गई थी।

चार्ल्स डार्विन ने अपना विश्वास खो दिया। और मैं आपको बताता हूँ कि उन्होंने अपना विश्वास क्यों खो दिया। चार्ल्स डार्विन अपनी पसंदीदा बेटे एनी की 9 साल की उम्र में हुई मौत से कभी उबर नहीं पाए। वह 12 साल तक न तो बच्ची के अंतिम संस्कार में शामिल हो पाए और न ही उसकी कब्र पर जा पाए।

दरअसल, वह उस पूरे जिले से दूर रहता था जिसमें वह और उसकी पत्नी रह रहे थे। और एक तरह से, यह कहना अप्रत्याशित था कि डार्विन ने अपना विश्वास खो दिया क्योंकि उसने अपनी पसंदीदा बेटी, 9 साल की बच्ची को खो दिया। और लेख आगे कहता है कि इसी वजह से डार्विन को अपनी ईसाई धर्म से हाथ धोना पड़ा।

यह एक आम गलतफ़हमी है कि महान व्यक्ति ने प्रजातियों की उत्पत्ति, और विशेष रूप से हमारी उत्पत्ति के बारे में अपने शोध के परिणामस्वरूप ईश्वर में विश्वास करना बंद कर दिया। वास्तव में, उनके पेशेवर काम का उनके धार्मिक विश्वासों या उनके अभाव से कोई लेना-देना नहीं था। उन्होंने खुद कहा कि विज्ञान और आस्था बिल्कुल अलग हैं और जरूरी नहीं कि वे आपस में जुड़े हों।

उन्होंने, सभी समझदार पुरुषों और महिलाओं की तरह, इस भ्रांति की निंदा की कि विज्ञान धर्म का दुश्मन है। उन्होंने इसके विपरीत सोचा, अगर कुछ भी हो। लेकिन वह एनी की मौत के लिए न्याय या कारण नहीं देख पा रहे थे।

और अन्यायी और अनुचित ईश्वर पर क्रोध करने के बजाय, उसने ईश्वर में अपने विश्वास को कम करना पसंद किया। और जो विश्वासी शोक मना रहे हैं, उनके बीच बहुत बड़ा जोखिम है। और यह वह बड़ी समस्या थी जो होलोकॉस्ट के परिणामस्वरूप यहूदी विश्वासियों पर आ पड़ी।

यह इतना अकल्पनीय है कि कई यहूदियों ने ईश्वर में अपनी आस्था पूरी तरह से त्याग दी। और एली विज़ेल के महान मिशनों में से एक यह था कि वे इस पर दुख जताएं और कहें, हां, मैं होलोकॉस्ट को बर्दाश्त नहीं कर सकता, लेकिन इससे ईश्वर में मेरी आस्था खत्म नहीं होती। इसलिए, आस्था को खतरा है।

और जीवन को खतरा है। मुझे पहले लगा कि यह बात बहुत बढ़ा-चढ़ाकर कही गई है। डोरोथी सुल्ला ने अपनी किताब में दुख पर लिखा है, उन्होंने तो यहां तक कहा है कि आपको अपने दुख को शब्दों में बयां करना चाहिए, आपको इसे बोलकर बताना चाहिए, नहीं तो यह आत्महत्या की ओर ले जा सकता है।

आपका दुःख ऐसा हो सकता है, अगर आप उससे निपट नहीं पाते, अगर आप दुःख की प्रक्रिया से नहीं गुजरते, तो इसका परिणाम आत्महत्या हो सकता है। लेकिन मुझे याद है कि मेरे एक पादरी के दौरे में, मैं एक ईसाई युवक से मिला था जो इसी तरह से पीड़ित था। और मैं आपको जो लिखा था उसे पढ़कर सुनाता हूँ।

रेमंड को आत्महत्या से बचने के लिए एहतियात के तौर पर एक शाम देर से अस्पताल लाया गया। वह अपने मध्य-बीस के दशक में एक अच्छा आदमी था, अपने चर्च में युवा पादरी की सहायता करता था और किशोरों की मदद करने के लिए समर्पित था। अब, उसे मदद की ज़रूरत थी।

कुछ महीने पहले, उसके माता-पिता की एक के बाद एक मौत हो गई थी, दो कड़वे झटके। फिर उसे पता चला कि उसकी गर्लफ्रेंड की मौत ओवरडोज की वजह से हो गई थी। यह सब बहुत ज्यादा था।

उसे एम्बुलेंस द्वारा इस बंद मनोरोग इकाई में लाया गया। अगले दिन, कर्मचारियों ने एक पादरी को देखने के लिए अनुरोध किया। जब मैं वहाँ पहुँचा, तो मैंने रेमंड को धीरे से थका हुआ नींद से जगाया।

वह अपनी आँखों से ओझल होकर बिस्तर पर बैठ गया और बोला, "मैं बस सोना चाहता हूँ। मुझे यह सुनकर खुशी हुई कि उसने इनकार करने का यह सुरक्षित तरीका दिखाया। इससे मुझे एहसास हुआ कि उसका रहना ज़्यादा लंबा नहीं होगा और उसे जल्द ही आउटपैशेंट के पास भेज दिया जाएगा।"

और इसलिए, यह मेरी एकमात्र यात्रा होने वाली थी। मुझे यह भी एहसास हुआ कि यह लंबे समय तक देहाती बातचीत का अवसर नहीं था। आगे के रास्ते के बारे में मैं क्या संक्षिप्त संदेश छोड़ सकता था? मैंने एक पल के लिए सोचा और कहा, मैं तुम्हारे साथ तीन शब्द छोड़ना चाहता हूँ, रेमंड: आँसू, बातचीत, और समय।

मैंने हर शब्द के साथ एक छोटा-सा वाक्य जोड़ा और फिर उसे वापस सोने के लिए कहा और जब वह उठे तो उन तीन शब्दों को याद रखना। मैंने उसे छोड़ दिया और कहा, भगवान तुम्हारा भला करे। बाद में, किताब के अंत में, मैं इस कहानी पर वापस आता हूँ।

जब रेमंड, वह युवक जिसकी असहनीय दुःख की कहानी इस पुस्तक की प्रस्तावना में बताई गई थी, अपनी बहुत जरूरी नींद से जागा, तो उसे शायद मेरी यात्रा याद न रही हो। थकावट और अवसाद शक्तिशाली नींद लाने वाले होते हैं। फिर भी मुझे संदेह है कि वे तीन शब्द, आँसू, बातचीत और समय, उसके अचेतन में बीज की तरह गिरे और उसके बाद के हफ्तों में अंकुरित हुए।

उनकी व्यक्तिगत त्रासदी के शोक का समाधान जल्दी या आसानी से नहीं हो सकता था, लेकिन शोक से आशा उभरती है। आशा, जो उपचार का साधन है, के बीज बहुत छोटे होते हैं, लेकिन वे जीवनदायी होते हैं। और इसलिए हम वहाँ हैं।

उस जोखिम को बहुत ध्यान में रखना होगा, आस्था खोने का जोखिम और यहां तक कि जान गंवाने का जोखिम।

फिर, पंद्रहवां बिंदु, आखिरी बिंदु जो मैं कहना चाहता हूँ, मैं फिर से गेराल्ड सितजर की एक किताब का हवाला देता हूँ, और मैं शीर्षक का उल्लेख करता हूँ, ए ग्रेस डिस्माइज्ड, हाउ द सोल ग्राज थ्रू लॉस। और पहले तो मुझे बुरा लगा।

आखिर वह कैसे कह सकता है कि यह एक छिपी हुई कृपा है? उसने अपनी माँ को खो दिया। उसने अपनी पत्नी को खो दिया। उसने अपने एक बच्चे को उस भयानक कार दुर्घटना में खो दिया।

आखिरकार, बहुत समय बाद वह इसे छिपी हुई कृपा के रूप में पहचान पाया और वह इसे इस उपशीर्षक के साथ समर्थन दे सका: कैसे आत्मा हानि के माध्यम से बढ़ती है। एक बिंदु पर, वह उस तरह से बोलता है, और वह कहता है कि कैसे, एक अजीब तरीके से, उसके दुःख ने उसे बढ़ने में मदद की है, और उसके दुःख ने उसे अच्छे के लिए बदल दिया है। यह कुछ ऐसा है जिसे हमें ध्यान में रखना चाहिए, कुछ ऐसा जिसे हम किसी भी तरह से लंबे समय तक सराहना नहीं कर सकते हैं जब हम दुःख से ग्रस्त होते हैं, और हम पाते हैं कि दुःख वास्तव में जुनूनी है।

यीशु ने कहा, धन्य हैं वे जो शोक करते हैं, क्योंकि उन्हें सांत्वना मिलेगी। दुःख यह दर्शाता है कि जिन लोगों ने नुकसान झेला है, वे वास्तव में दुःख की दुनिया में रह रहे हैं, और यह उन लोगों की भावनात्मक पीड़ा को व्यक्त करता है जो खुद के लिए या दूसरों के लिए दर्द महसूस करते हैं। दुःख महान और अनुग्रहपूर्ण है।

यह आत्मा को तब तक बड़ा करता है जब तक आत्मा एक साथ शोक और आनन्द मनाने में सक्षम नहीं हो जाती, दुनिया के दर्द को महसूस करने और एक ही समय में दुनिया के उपचार की उम्मीद करने में सक्षम नहीं हो जाती। चाहे कितना भी दर्दनाक क्यों न हो, दुःख आत्मा के लिए अच्छा है। गहरा दुःख अक्सर जीवन से दिखावा, घमंड और बर्बादी को दूर करने का प्रभाव डालता है।

यह हमें जीवन में सबसे महत्वपूर्ण क्या है, इस बारे में बुनियादी सवाल पूछने पर मजबूर करता है। दुःख से जीवन सरल हो सकता है, अनावश्यक चीजों से कम उलझा हुआ। यह आश्चर्यजनक रूप से स्पष्ट करता है।

यही कारण है कि कई लोग जो अचानक और गंभीर नुकसान झेलते हैं, वे अक्सर अलग इंसान बन जाते हैं। वे अपने बच्चों या जीवनसाथी के साथ ज़्यादा समय बिताते हैं, अपने दोस्तों के प्रति ज़्यादा स्नेह और प्रशंसा व्यक्त करते हैं, दूसरे घायल लोगों के लिए ज़्यादा चिंता दिखाते हैं, किसी अच्छे काम के लिए ज़्यादा समय देते हैं, या असाधारण चीज़ों का ज़्यादा आनंद लेते हैं, साधारण चीज़ों का ज़्यादा आनंद लेते हैं, जीवन की साधारणता का ज़्यादा आनंद लेते हैं। फिल्म, द डॉक्टर में, एक घमंडी चिकित्सक जो अपने रोगियों की वास्तविक ज़रूरतों के प्रति कम सम्मान दिखाता है, तब बदल जाता है जब वह अचानक खुद एक रोगी बन जाता है।

कैंसर से अपने संघर्ष के बारे में उनका खुद का विवरण उन्हें उन लोगों के प्रति संवेदनशील बनाता है, जिन्हें वे पहले केवल बीमार शरीर मानते थे। और हम वहीं हैं। अजीब बात है, दुःख और पीड़ा और दुःख के बारे में कहने के लिए कुछ बहुत ही सकारात्मक है, यह हमें बड़ा कर सकता है, यह हमें अच्छे के लिए बदल सकता है, और हम खुश हो सकते हैं, वास्तव में इसके लिए खुश हो सकते हैं, और यहां तक कि इसके लिए भगवान को धन्यवाद देने के बारे में भी सोच सकते हैं, कि इससे कुछ अच्छा हुआ।

रोमियों 8:28, वह अच्छा प्रभाव, यह सच है।

यह डॉ. लेस्ली एलन विलाप की पुस्तक पर अपनी शिक्षा में है। यह सत्र 15 है, विलाप और ईसाई

धर्म।